# साहित्य अकादमी का 'साहित्योत्सव-2025' संपन्न

**नई दिल्ली (एसएनबी)।** साहित्य अकादमी द्वारा मनाए जा रहे एशिया के सबसे बड़े साहित्य उत्सव साहित्योत्सव 2025 का शानदार समापन हो गया। पंद्रह सत्रों में आयोजित दिव्यांग लेखक एवं साहित्य में रुचि रखने वाले बच्चे भी साहित्योत्सव का हिस्सा बने। 10 भाषाओं के दिव्यांग लेखकों ने विनोद अग्मुदानी एवं अरविंद पी. भाटीकर की अध्यक्षता में कविता-पाठ एवं कहानी पाठ प्रस्तुत किया। आठ विचार-सत्रों में भक्तिकाव्य के उपन्यास, भारत की सांस्कृति परंपरा पर वैश्वीकरण का प्रभाव, अनूदित कृतियों को पढ़ने का महत्व, एकता और सामाजिक एकजुटता, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और साहित्यिक रचनाएं आदि विषयों पर विशेषज्ञों के साथ विचार विमर्श हुआ। भारतीय साहित्यिक परंपराएं: विरासत और विकास विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम दिन भारतीय कविता, डिजिटल साहित्य एवं आध्यात्मिक साहित्य पर गंभीर विचार-विमर्श हुआ। इन सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, श्यौराज सिंह बेचैन एवं विष्णु दत्त राकेश ने की। बहुभाषी कवि सम्मिलन एवं कहानी-पाठ के भी तीन सत्र हुए।

बच्चों के लिए चित्रकला/रेखांकन प्रतियोगिता एवं भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें 15 स्कूलों के 300 से ज्यादा बच्चों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में 12 बच्चों को पुरस्कृत किया गया। एक अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम 'लेखक से भेंट' प्रख्यात बांग्ला लेखक सुबोध सरकार के साथ किया गया। इस अवसर पर उनकी पुरस्कृत बांग्ला कविता-संग्रह के हिन्दी अनुवाद 'द्वैपायन सरोवर के किनारे' का लोकार्पण साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य एवं पूर्व अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर पुस्तक की अनुवादिका अमृता बेरा और साहित्य अकादमी के सचिव भी उपस्थित थे। ज्ञात हो कि एशिया के सबसे बड़े साहित्य उत्सव में छह दिन में 100 से अधिक सत्रों में 700 से अधिक प्रसिद्ध लेखक और विद्वानों ने भाग लिया, जिसमें देश की 50 से अधिक भाषाओं का भी प्रतिनिधित्व हुआ।

- छह दिन में 100 से अधिक सत्रों का आयोजन
- 700 से अधिक प्रसिद्ध लेखक और विद्वानों ने लिया भाग
- देश की 50 से अधिक भाषाओं का हुआ प्रतिनिधित्व